कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन शुक्रवार

दिनांक 16-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .....संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।165/2019

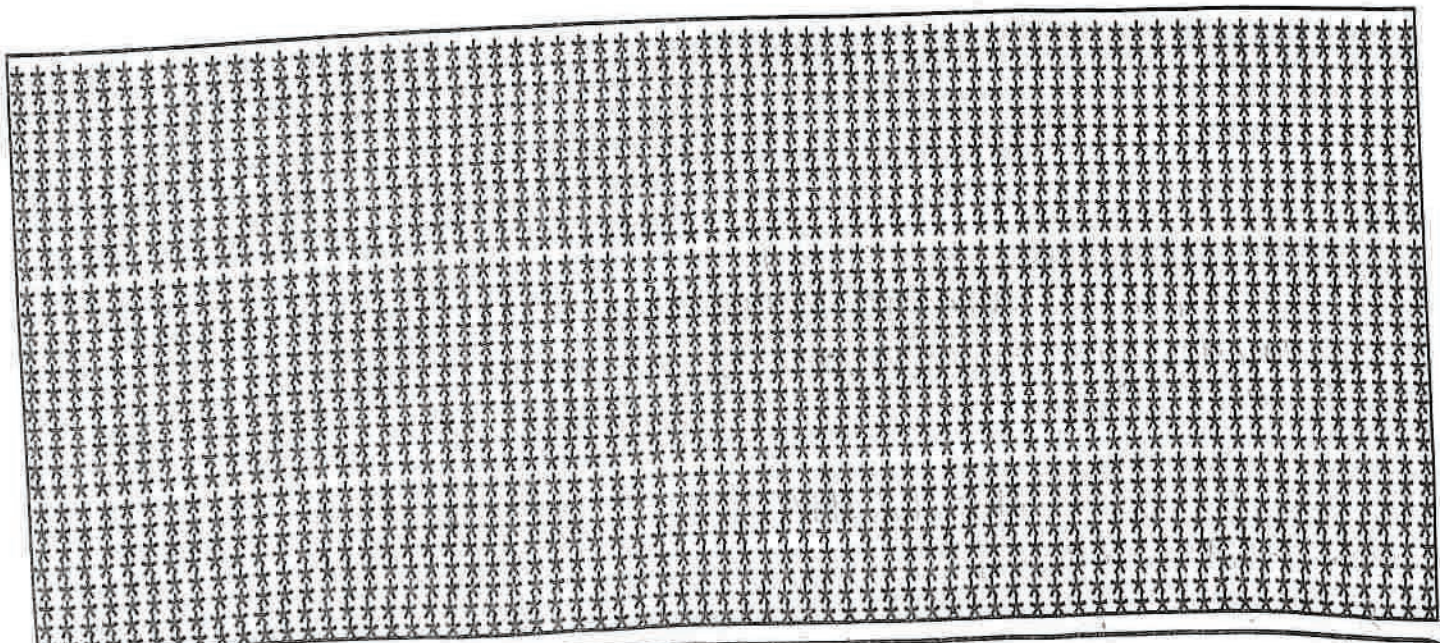

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक य क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः पूरीक्ष समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक क 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ का उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार क त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - 1

प्र

प्रश्न 1
उत्तर - शीर्षक :- "आधुनिक काल में नारी"

प्रश्न 2
उत्तर - शिक्षा के प्रचार-प्रसार से नारियाँ आत्मविश्वास से भर गई।

प्रश्न 3
उत्तर :- आधुनिक नारी का आजादी में महत्वपूर्ण योगदान रहा। गांधी जी के एक आह्वान पर न जाने कितनी महिलाएँ घर-बार छोड़कर देश की आजादी के लिए निकल पड़ी। सभी वर्गों की महिलाओं ने आजादी में अपना योगदान दिया।

प्रश्न 4
उत्तर :- कविता में सपनों में खोये हुए आदमी को जगाने की बात कही गई है।

प्रश्न : 5
उत्तर :- आदमी को वक्त पर जगाना आवश्यक है क्योंकि जो लोग इससे आगे निकल गए हैं उनकी बराबरी करने के लिए यह घबराकर कार्य करेगा और लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकेगा।

प्र: 6
उत्तर :- घबराकर भागने व क्षिप्र गति में अंतर है। क्योंकि घबरा कर कार्य करने से व्यक्ति लक्ष्य को प्राप्त कर नहीं कर सकता तथा क्षिप्र गति में व वह सजग एवं सावधान रहकर सही क्षण में कार्य करता है और लक्ष्य को प्राप्त कर लेता

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्र॰7 खण्ड - २

उत्तर:- (ख) आतंकवाद : एक विश्वव्यापी समस्या।

निबंध की रूपरेखा

प्रस्तावना - आतंकवाद की परिभाषा।

i) आतंकवाद के उद्देश्य

ii) आतंकवाद को नियंत्रित करने के उपाय

(iii) उपसंहार

(iv)

i) प्रस्तावना:-

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज की उन्नति की कामना करता है। हमने ने भी समाज की उन्नति की कामना की थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद समाज को उच्च शिखर तक पहुँचाने की कोशिश की थी लेकिन उन्नति का चमन खिल पाता उससे पहले ही "आतंकवाद" रूपी समस्या अजगर के भांति मुंह फैलाकर खड़ी हो गई और हमारी सारी कामनाएं मिट्टी के घरौंदे की तरह नष्ट हो गई। आतंकवाद की समस्या अब पूरे विश्व में फैल गई है अतः यह विश्वव्यापी समस्या बन गई है। पूरा विश्व इस समस्या से परेशान है। भारत इस समस्या से अत्यधिक परेशान है अतः भारत शक्तिशाली देश होकर भी विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में नहीं है।

आतंकवाद का अर्थ होता है भय फैलाना, सामाजिक मूल्यों को नष्ट करना। अनेक संगठन आतंकवादी घटनाओं को अंजाम देते हैं और लोगों भय फैलाते हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

ii) आतंकवाद के उद्देश्य :-

विश्व में कई आतंकवादी संगठन विद्यमान हैं जो आतंकवादी घटनाओं को अंजाम देते हैं। इन आतंकवादी संगठनों के अनेक उद्देश्य हैं।

उन आतंकवादी संगठनों का a) प्रथम उद्देश्य है लोगों में डर व्याप्त करना। ये अनेक आतंकवादियों द्वारा बम विस्फोट, आक्रमण आदि करवाते हैं जिससे लोगों में भय व्याप्त हो जाता है। वर्तमान में मुख्य आतंकवादी संगठन मौजूद जैसे जैश ए मोहम्मद, लश्कर ए तोयबा आदि मौजूद हैं।

आतंकवाद का b) दूसरा उद्देश्य है देशों की लोकतांत्रिक व्यवस्था को खत्म करना। ये आतंकवादी संगठन विभिन्न देशों की लोकतांत्रिक व्यवस्था को समाप्त कर देना चाहते हैं तथा वहाँ तानाशाही शासन की स्थापना करना चाहते हैं। देशों में आतंक फैलाना चाहते हैं। सरकार को अपने अधीन करना चाहते हैं।

आतंकवाद का c) तृतीय उद्देश्य है मानव मूल्यों का पतन करना। ये आतंकवादी संगठन लोगों में प्रेम, सहयोग, सहृदयता की जगह द्वेष, ईर्ष्या, घृणा की भावनाओं को स्थापित करना चाहते हैं।

इस तरह आतंकवादी संगठनों के अनेक उद्देश्य हैं जो उन उद्देश्यों की पूर्ति करने में लगे हुए हैं। अनेक आतंकवादी घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। जैसे - मुम्बई के ताज होटल पर हमला, संसद भवन पर आक्रमण आदि। इस समस्या का निराकरण करना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि यह समस्या अपना विस्तृत रूप ले रही है।

iii) आतंकवाद को नियंत्रित करने के उपाय :-

हम जानते हैं कि यदि किसी छोटे से घाव का समय पर उपचार नहीं किया जाता है तो वह नासूर बन जाता है, यदि छोटे से झगड़े का समाधान नहीं किया जाता है तो वह महायुद्ध बन जाता है। इसी तरह अगर आतंकवाद रूपी विश्वव्यापी समस्या का समय पर समाधान नहीं किया गया तो यह एक विकराल रूप धारण कर सकती है जो कि मानव जाति के हित में नहीं है अतः आतंकवाद को शीघ्र दूर करना अत्यंत आवश्यक है। आतंकवाद को निम्न उपायों से नियंत्रित किया जा सकता है।

a) आतंकवाद को दूर करने के लिए सरकार की उदासीनता को दूर करना चाहिए। सरकार को इसके लिए सख्त नियम बनाकर उनको लागू करना चाहिए।

b) आतंकवाद को दूर करने के लिए शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना चाहिए। शिक्षा-प्रणाली में सुधार करना चाहिए। लोगों को शिक्षित किया जाना चाहिए। साक्षरता में वृद्धि होनी चाहिए तभी लोग जागरूक होंगे और इस समस्या पर नियंत्रण स्थापित होगा।

c) इस विश्वव्यापी समस्या को दूर करने के लिए लोगों में द्वेष, ईर्ष्या, घृणा के स्थान पर प्रेम सहयोग, सहृदयता की भावना को विकसित किया जाना चाहिए।

इस तरह आतंकवाद रूपी समस्या पर नियंत्रण लगाया जा सकता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

iv) उपसंहार :-

संपूर्ण अध्ययन के बाद यह निष्कर्ष निकला कि आतंकवाद एक विश्वव्यापी समस्या है और यह अपना विस्तृत रूप धारण करती जा रही है। अगर इस समस्या को समय पर नियंत्रित नहीं किया गया तो यह अपना विकराल रूप धारण कर लेगी और विश्व के लिए एक खतरा साबित होगी अतः इस पर नियंत्रण लगाया जाना अत्यंत आवश्यक है। इस पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए सरकार की उदासीनता को दूर किया जाना चाहिए। लोगों में मानव मूल्यों की स्थापना होनी चाहिए तथा शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए। तभी यह विश्वव्यापी समस्या दूर होगी और हमारा देश विकासित राष्ट्रों की श्रेणी में आएगा। भारत का विश्व में गौरव बढ़ेगा। भारत पुनः एक विश्व गुरु बनेगा एवं पूरे विश्व का नेतृत्व करेगा। तभी हम गर्व से कह सकेंगे।

"मेरा भारत महान"

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र: 8

उत्तर :- पत्र :- बजट स्वीकृति हेतु ।

पत्रांक:- क ख ग / 123 / 8/20 / 2019

प्रेषक :-
तहसीलदार,
भीण्डर ।

प्रेषिति :-
सेवा में,
श्रीमान जिलाधीश महोदय,
उदयपुर ।

विषय :- जल व्यवस्था के लिए अतिरिक्त बजट माँग हेतु ।

महोदय,
निवेदन है कि हमारी तहसील में पिछले एक महीने से जलसंकट बना हुआ है। लोगों को पेयजल एवं अन्य उपयोगों के लिए जल प्राप्त नहीं हो रहा है जिससे लोगों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जल की माँग बढ़ रही है।

अतः आपसे निवेदन है कि हमारी तहसील में जलसंकट को देखते हुए अतिरिक्त बजट भेजने की कृपा करें। मैं आपका आभारी रहूँगा।

धन्यवाद

भवदीय
तहसीलदार,
भीण्डर ।

दिनांक 16-3-19

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड-3

प्र:9
उत्तर:- क्रिया :- वाक्य में जिन शब्दों से किसी काम का करना या होना पाया जाए तो उसे क्रिया कहते हैं।
कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं।
i) सकर्मक क्रिया ii) अकर्मक क्रिया।

प्र:10
उत्तर:- i) कारक :- उपर्युक्त वाक्य में "कर्म कारक" है।
ii) काल :- उपर्युक्त वाक्य में भूतकाल है।
iii) वाच्य :- उपर्युक्त वाक्य में कर्मवाच्य है।

प्र:11
उत्तर:- गजानन शब्द में 'बहुव्रीही समास' है।
बहुव्रीही समास की विशेषताएँ :-
i) बहुव्रीही समास में कोई पद प्रधान नहीं होता है।
ii) इस समास का विग्रह करने पर कोई अन्य अर्थ प्रकट होता है।

प्र:12
उत्तर:- शुद्ध वाक्य :-
क) मुझे अभी जाना है।
ख) मेरे पास केवल पचास रुपये हैं।

प्र:13
उत्तर:- मुहावरों का अर्थ
क) बहाने अगर मगर करना :- बहाने बनाना।
ख) आपे से बाहर होना :- वश में न रहना।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र:14
उत्तर:- लोकोक्ति
अंधेर नगरी चौपट राजा :- अयोग्य प्रशासन ।

प्र:15 खण्ड-4
उत्तर:-
संकेत :- बूझत स्याम .... राधिका भोरी ।

कठिन शब्दार्थ :- i) पौरी - आँगन में
ii) ढोटा - पुत्र ।

संदर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक "क्षितिज" में भक्तिकालीन कवि "सूरदास" द्वारा रचित "भ्रमर-गीत" से उद्धृत है।

प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश में कवि सूरदास ने राधा और श्रीकृष्ण के प्रथम मिलन का वर्णन किया है।

व्याख्या :- कवि वर्णन करते हुए बताते हैं कि जब राधा प्रथम बार ब्रज आती है तो श्रीकृष्ण उनसे पूँछते हैं कि हे गोरी तू कौन, तू कहाँ रहती है एवं किसकी बेटी है। तुझे कभी इन ब्रज की गलियों में नहीं देखा। तब राधा कहती है कि हम ब्रज क्यों आएंगे, मैं तो अपने आँगन में खेलती रहती हूँ। राधिका कहती है कि सुना है कि ब्रज में नंद बाबा का पुत्र माखन और दही की चोरी करता है। तब श्रीकृष्ण कहते हैं कि हमने तुम्हारा क्या चुरा लिया, तुम इनसब

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

बातों को छोड़ो और मेरे संग मेरी जोड़ीदार बनकर खेलने चलो। सूरदास कहते हैं कि श्रीकृष्ण आनंदपूर्ण स्वभाव के हैं और उन्होंने इसी स्वभाव से भोली राधिका को अपनी बातों में फंसा लिया और उसे खेलने के लिए राजी कर लिया।

विशेष :- i) प्रस्तुत पद्यांश की भाषा ब्रज है।
ii) प्रस्तुत पद्यांश में श्रृंगार रस है।
iii) प्रस्तुत पद्यांश में माधुर्य गुण है।
iv) प्रस्तुत पद्यांश में वैदर्भी रीति का प्रयोग हुआ है।
v) प्रस्तुत पद्यांश अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है।

प्र:16
उत्तर:- संकेत :- ईर्ष्या से बचने का उपाय .... कर देगा।

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक "क्षितिज" में "रामधारी सिंह दिनकर" द्वारा रचित "ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से" नामक पाठ से उद्धृत है।

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश में दिनकर ने ईर्ष्या से बचने के उपाय का वर्णन किया है।

व्याख्या :- लेखक दिनकर बताते हैं कि ईर्ष्या से बचने का एकमात्र उपाय मानसिक अनुशासन है। मानसिक अनुशासन का अर्थ है मन की इंद्रियों पर संयम रखना। मन में अनगल बातें नहीं आने देना

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी द्वारा

जो व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का है उसे फालतू बातों को सोचना नहीं चाहिए। उसे यह खोजना चाहिए कि किस कमी के कारण वह ईर्ष्यालु बन गया है, उस कमी का रचनात्मक उपाय क्या है उसे अपनाना चाहिए। जिस दिन से उसमें यह इच्छा जागृत होगी, उस दिन से वह ईर्ष्यालु नहीं रहेगा। अतः ईर्ष्यालु लोगों को मानसिक अनुशासन अपनाना चाहिए।

विशेष :- (i) प्रस्तुत गद्यांश की भाषा सहज सरल एवं प्रभावपूर्ण है।
(ii) प्रस्तुत गद्यांश में तत्सम-तद्भव शब्दावली का प्रयोग हुआ है।
(iii) प्रस्तुत गद्यांश में ईर्ष्या से बचने के उपाय का वर्णन है।

प्र:17
उत्तर:- प्रभो कविता का सार :- प्रभो कविता में छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद ने ईश्वर के प्रति आस्था प्रकट करते हुए उसकी शक्तिमत्ता, सौंदर्य एवं उसके विस्तार का वर्णन किया है। वे ईश्वर को सभी का संरक्षक मानते हैं।
जयशंकर प्रसाद कहते हैं कि चन्द्रमा की विशाल किरणें ईश्वर के प्रकाश का परिचय दे रही हैं कि ईश्वर का प्रभा प्रकाश कितना है। ईश्वर की दया का परिचय विस्तृत सागर दे रहा है। ईश्वर की दया भी सागर की तरह विस्तृत है। ईश्वर की प्रशंसा की गीत समुद्र की लहरें गा रही हैं अर्थात ये

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

सभी ईश्वर के प्रतिरूप हैं। कवि कहते हैं कि जिसे भी ईश्वर की मुस्कान को देखना है, वह चन्द्रमा की चाँदनी को देख सकता है क्योंकि वही ईश्वर की मुस्कान है। कवि कहते हैं तारों की ज्योति ईश्वर के घर का पता बता रही हैं। कवि कहते हैं कि जिसे भी विशाल मंदिर में दीपकों की माला देखनी है तो वह रात्रि में आकाश में तारों को देख सकता है यह सब प्रभु की महिमा है। कवि कहते हैं कि ईश्वर संपूर्ण प्रकृति का पालक है जैसे एक माली अपने बगीचे की रक्षा करता है वैसे ही ईश्वर भी इस प्रकृति की रक्षा करते हैं। ईश्वर का विस्तार अनंत है।

कवि प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु! आपकी कृपा हमारे ऊपर सदा बनी रहे। आपकी कृपा से ही हमारे मन की सारी इच्छाएँ पूरी होती हैं। व आपका आशीर्वाद हमारे ऊपर सदा बना रहे।

प्र: 18

उत्तर:- लोकसंत पीपा का जीवन :-

लोक संत पीपा का जन्म 1390 वि. सं. में झालावाड़ जिले में खींची राजवंश में गागरौन नामक स्थान पर हुआ। वे एक राजा थे। उनकी पत्नी का नाम सीता था। एक बार वैष्णव भक्तों की मण्डली पीपा के राज्य में आई तो उन्होंने पीपा को संत रामानंद के पास जाने की सलाह दी। तब संत पीपा अपनी पत्नी के साथ स्वामी रामानंद के पास जाने की तैयारी की। जब त्रिकाल-दर्शी रामानंद को यह पता चला कि पीपा यहाँ आ रहा है तो उन्होंने तुरंत आश्रम के दरवाजे बंद करवा दि

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उन्होंने कहा कि हम गरीब हैं राजाओं से क्या मेल। इस पर पीपा ने उसी समय राजकाज छोड़ दिया और प्रभु की भक्ति में लीन हो गए। वे सदा प्रभु भक्ति में लगे रहते थे। पीपा का निधन वि. सं. 1460 में हुआ।

संत पीपा की शिक्षाएँ :- संत पीपा प्रारंभ में स्वयं मूर्तिपूजा में विश्वास करते थे लेकिन बाद में उन्होंने निर्गुण भक्ति धारा को अपनाया। उनकी शिक्षाएँ निम्न थी।

(i) पीपा ने बाह्याडंबरों का विरोध किया। उन्होंने मूर्तिपूजा का विरोध किया।

(ii) उन्होंने बताया कि कोई छोटा-बड़ा नहीं है सभी समान हैं। भेदभाव नहीं करना चाहिए। पीपा निम्न वर्ग के हितैषी थे। उन्होंने निम्न वर्ग में आत्म-विश्वास जाग्रत किया।

(iii) पीपा हिंसा के घोर विरोधी थे तथा माँस-भक्षण की वे सदा निंदा किया करते थे।

(iv) पीपा ने बताया कि यह शरीर पंचतत्वों से बना है। यहीं प्रभु है। संतों का निवास भी यहीं है।

(v) पीपा ने बताया कि आत्मा और परमात्मा एक ही है। गुरु के सानिध्य में परमात्मा से साक्षात्कार हो सकता है।

प्र:19

उत्तर :- उपर्युक्त सोरठे के माध्यम से कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि हमें हमेशा मीठी वाणी बोलनी चाहिए। मीठे वचनों से लोग प्रभावित होते हैं। हमें मधुर वचनों का ही प्रयोग

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

करना चाहिए। जैसे कोयल मीठी बोली बोलकर सभी का मन हर लेती है जबकि कौआ कड़वा बोलता है जिसकी वाणी अच्छी नहीं लगती है।

प्र:20
उत्तर - "मातृ वंदना" कविता में कवि निराला माँ भारती के चरणों में अपना सर्वस्व समर्पण करना चाहता है। वे कहते हैं मेरे जीवन के सभी स्वार्थ, सभी मनोकामनाएँ आपको समर्पित हों। मेरा यह जीवन आपको समर्पित है। मेरा संपूर्ण श्रम आपको समर्पित है। मेरे जीवन के सभी लक्ष्य आपको समर्पित हैं।

प्र:21
उत्तर- 'कन्यादान' कविता वर्तमान समय में प्रासंगिक है। वर्तमान समय में कन्याओं को ससुराल में अनेक कष्ट भोगने पड़ते हैं। कवि 'ऋतुराज' ने इस कविता में माँ द्वारा विवाह के समय पर बेटी को दी जाने वाली सीखों का वर्णन है। यह कविता बेटियों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करती है। वर्तमान समय में इन सीखों का अत्यंत महत्व है।

प्र:

प्र:22
उत्तर:- लेखक ने स्थान में यश प्राप्ति के लिए देवालय बनाने का निर्णय लिया लेकिन तभी उसे याद आया कि वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति बढ़ रही है, अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार-प्रसार हो रहा है जिससे कोई भी व्यक्ति मंदिर में नहीं आएगा। इस कारण लेखक भारतेन्दु ने देवालय बनाने का विचार त्याग दिया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्र: 23
उत्तर - जब मोहन राकेश कन्याकुमारी में भ्रमण के लिए गए तो उनको वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य बहुत अच्छा लगा। वहाँ पर स्वामी विवेकानंद ने समाधि लगाई थी। वहाँ के सूर्योदय एवं सूर्यास्त को देखकर लेखक का मन अभिभूत हो गया। वहाँ सूर्यास्त के समय पानी में विविध रंगों में परिवर्तन को देखकर लेखक का मन गद्गद् हो गया। कन्याकुमारी तीन ओर से पानी से घिरा हुआ था। उस प्राकृतिक छटा को देखकर उन्होंने भारत को प्रकृति का खूब-सूरत उपहार बताया।

प्र: 24
उत्तर:- संत दादू के अनेक शिष्य थे। जिनमें बखना, रज्जब, सुंदरदास, गरीबदास आदि प्रमुख हैं। उन्होंने अपने शिष्यों को शिक्षा दी कि हमें सदा निंदा स्तुति से दूर रहना चाहिए। निंदा वही व्यक्ति करता है जिसके हृदय में ईश्वर का निवास नहीं है। निंदा करने वाला व्यक्ति प्रभु की भक्ति नहीं कर पाता है। दादू को बड़ा आश्चर्य होता था जब लोग खुलेआम किसी की निंदा करते थे

प्र: 25
उत्तर:- दादू पंथ के पंचतीर्थ:- कल्याणपुर, सांभर, आमेर, नराणा तथा भैराणा है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्र:26
उत्तर:- प्रभु भक्ति के कारण संत पीपा का मन राजकाज से उचट गया।

प्र:27
उत्तर:- श्याम ने झूला झूलने के लिए एक नायिका (गोपी) को आमंत्रित किया।

प्र:28
उत्तर:- ग्रीष्म ऋतु के भयंकर ताप के कारण भी खेतों की मिट्टी पपराई हुई थी?

प्र:29
उत्तर:- महाकवि निराला का परिचय:-

* जीवन परिचय:-

* छायावाद के प्रमुख कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म 1896 में बंगाल के मेदिनीपुर गाँव में हुआ।
* इनके पिता का नाम रामसहाय त्रिपाठी था।
* इन्होंने प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर स्वाध्याय से अंग्रेजी उर्दू, बांग्ला आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया है।
* बाल्यावस्था में ही इनके पिता व चाचा की मृत्यु हो गई। इनकी बेटी सरोज की मृत्यु ने निराला को भीतर तक झकझोर कर रख दिया।
* इनका निधन 1961 में हुआ।

साहित्यिक परिचय:-

निराला ने छायावाद में अपना महत्वपू

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

योगदान दिया।
रचनाएँ:- रानी और कानी, नया पत्ता, कुकुरमुत्ता, अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, राम की शक्ति, पूजा, आराधना।

ii) कवि देव का परिचय :-
जीवन परिचय :-
* रीतिकाल के प्रमुख कवि देव का जन्म 1730 ई. में इटावा में हुआ था।
* इनके पिता का नाम बिहारीलाल दुबे था।
* इनका मूल नाम देवदत्त था।
* ये तंत्र, आदि का भी ज्ञान रखते थे।
* इनका निधन 1824 ई. में हुआ।

साहित्यिक परिचय :- कवि देव रीतिकाल के प्रमुख कवि थे। इन्होंने अपने काव्य में ब्रज भाषा का प्रयोग किया है।
रचनाएँ :- भवानी विलास, रस विलास, कुशल-विलास, अष्टयाम।

प्र:30
उत्तर:-
सड़क सुरक्षा :-
i) इस चिह्न का अर्थ है :- एक ही ओर रास्ता संकेत
ii) इस चिह्न का अर्थ है:- साइकिल पर प्रतिबंध।
iii) इस चिह्न का अर्थ है:- हॉर्न पर प्रतिबंध अर्थात इस क्षेत्र में हॉर्न पर निषेध है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी लिखें
		iv) इस चिह्न का अर्थ है – चौड़ाई सीमा 2 मीटर है।

"समाप्त"